डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2006-2008
आर. एन. आई - राजहिन /2003/9899
प्रकाशन दिनांक : 5 दिसम्बर - 2007 . मूल्य : पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - पाँच | अंक - आठवां | दिसम्बर-2007 | मासिक पत्रिका

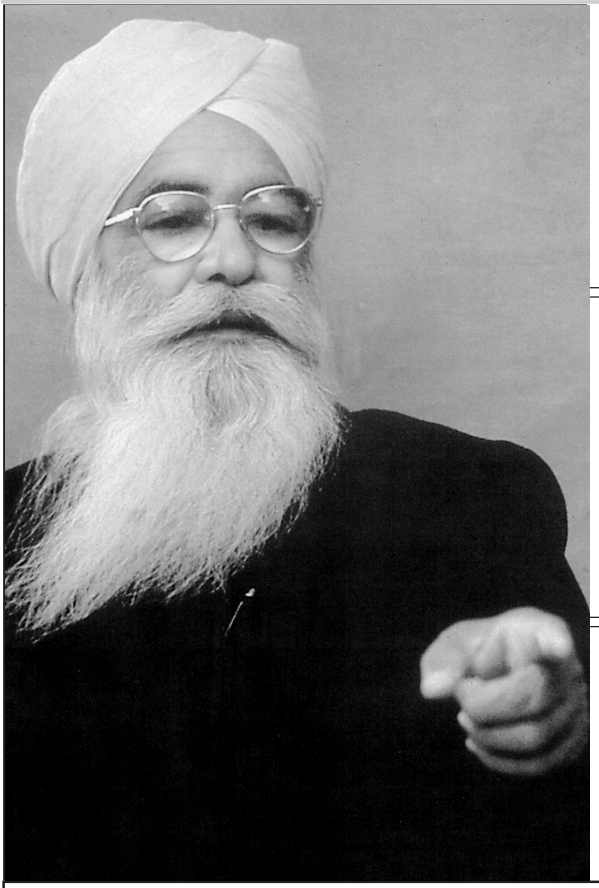

3
मेरे दिल के जज़्बे को समझें
परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा नए साल पर संदेश
29 दिसम्बर 1996

7
सतसंग की महिमा
(गुरु नानक देव जी की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
84 आर.बी. राजस्थान
12 फरवरी 1995

30
ध्यान
(प्रेमियों के सवालों के जवाब)
16 पी.एस. आश्रम
28 सितम्बर 1988

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर; 1027 अग्रसेन नगर श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

उप सम्पादक : नंदिनी **विशेष सलाहकार** : गुरमेल सिंह नौरिया

सहयोग : रेणु सचदेव, परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम : 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

Phone : 0154-246 4601 **Mobile :** 94144 - 80303
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in **Website :** www.ajaibbani.org

धन्य अजायब

गुरुदेव सावन रूप कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया है, अपनी भक्ति में लगाया है। भक्ति अमोलक धन है। यह न तो मांगने से मिलती है, न खरीदी जा सकती है; न खेतो में उगाई जा सकती है और न ही हम इसे किसी तरह के जोर से हासिल कर सकते हैं।

यह तो परमात्मा गुरुदेव की ही दया होती है कि वे इस संसार में आकर भक्ति का रास्ता चलाते हैं और हम भूले-भटके जीवों को अपनी भक्ति व प्यार में जोड़ते हैं।

हर महात्मा ने इस अमृतवेला की महिमा गाई है। यह अमृतवेला है, बड़ा शुभ मौका है; उद्यम करें, 'नाम' से जुड़े। आंखें बंद करके अपना सिमरन शुरू करें।

मुम्बई में सतसंगों के कार्यक्रम

9, 10, 11, 12 व 13 जनवरी - 2008

आरोग्य भूरा भाई भवन, शान्ति लाल मोदी मार्ग
(नजदीक मयूर सिनेमा) कांदिवली (पश्चिम), मुम्बई - 400 067

फोन : 022-221 88 353, 022-286 286 26, मो. 93246 51321

16 पी.एस आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रम

28, 29 व 30 दिसम्बर - 2007

2, 3, 4, 5 व 6 फरवरी - 2008

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा नए साल का संदेश

मेरे दिल के जज़्बे को समझें

29 दिसम्बर 1996

सच्चे पातशाह हुजूर सावन-कृपाल के प्यारे बच्चों!

नए साल की खुशी के मौके पर मेरे महान सतगुरु के पवित्र नाम पर और उनकी सच्ची याद में आप सबको मेरी तरफ से बहुत-बहुत शुभकामनाएं और बधाई। मैं चाहता हूं कि नया साल आप सबके लिए खुशियां भरा हो और आप सदा प्रगति के रास्ते पर रहें।

प्यारेयो! सब ऋषि-मुनि, पीर-पैगम्बरों ने समयानुसार अपनी बोली में हमें सावधान किया है कि पता नहीं मौत का बाज कब और कहां आकर हमें झपटा मारे? मौत का बाज न बड़ा देखे न छोटा, न स्त्री देखे न पुरुष, न अमीर देखे न गरीब, न गोरा देखे न काला, न पूर्व देखे न पश्चिम। यह कभी टलता नहीं, किसी से डरता नहीं; किसी का लिहाज नहीं करता। यह वक्त का पक्का और पाबंद है। यह निश्चित समय पर आकर मुंह दिखाता है और रोते-चिल्लाते हमारी जान को कुर्क करके अपने साथ ले जाता है। गुरुबानी का वाक है:

राणा राओ न को रहे, रंक न तुंग फकीर।
वारी आपो आपणी, कोए न बांधे धीर॥

परम पिता कृपाल आमतौर पर सतसंग में मौत का जिक्र करते हुए उर्दू की यह तुक पढ़ा करते थेः

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं।
सामान सौ बरस के पल की खबर नहीं॥

हम जीव मौत को भुलाए बैठे हैं। मौत को बिसारकर आने वाली सदियों के सामान बना रहे हैं हालांकि हमें पता नहीं कि अगला सांस आए या न आए!

सच्चे पातशाह सावन कहा करते थे, ''सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि हम अपने अनेक रिश्तेदारों, मित्रों को अपने कंधे पर उठाकर श्मशान भूमि में अग्नि के हवाले कर आते हैं लेकिन इस खचरे और मकरे मन ने हमें कभी महसूस नहीं होने दिया कि हम पर भी ऐसा एक दिन आएगा। हमें भी इस दुनिया के भरे बाजार से एक दिन जाना पड़ेगा लेकिन वह घड़ी हमें याद ही नहीं।'' गुरु बानी का फरमान हैः

कहां सो भाई मीत हैं, देख नैन पसार।
इक चाले इक चालसी, सब कोई अपनी वार॥

सूफी सन्त फरीद साहब का कहना है कि मौत के समय जान टूटती है और हड्डियां कड़-कड़ करती हैंः

जिन्द निमाणी कडिए हड्डा कू-कड़काए।

कबीर साहब समझाते हैंः

तन ते प्राण होत जब न्यारे, टेरत प्रेत पुकार।
आध घड़ी कोऊ न राखत, घर ते देत निकार॥

आप यह भी लिखते हैंः

घर की नार बहुत हित जास्यो, सदा रहत संग लागी।
जब ऐह हंस तजी यह काया, प्रेत प्रेत कर भागी॥

भक्त नामदेव जी ने इस मौके का चित्र इस तरह खींचा हैः

मेरी मेरी कौरव करते, दुर्योधन से भाई।
बारह योजन छत्र झुले थे, देही गिरज न खाई॥
सरव सोने की लंका होती, रावण से अधिकाई।
कहां भयो दर बांधे हाथी, खिन्न में भई पराई॥

सन्तों की बानी बहुत साफ होती है। सन्तों की बानी भ्रम नहीं रहने देती। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मरन न महूर्त पूछिया, पूछी तिथि न वार।
इकनी लदया इक लद चले, इकनी बध्धे भार॥

प्राणियों! आप यह ना समझें कि मौत पंडित से तिथि, वार पूछकर आएगी या मुहूर्त निकलवाएगी कि कौन सा समय ठीक है? आप यह भी कहते हैं कि यह मत सोचें! मौत गरीबों को ही डसती है, राजे-महाराजों का लिहाज करती है। मौत का डंक सबके लिए बराबर है।

नौं जिन्हा सुलतान खान, हुंदे डिट्ठे खेह।
नानक उठी चलया, सब कूड़े टुट्टे नेह॥

प्यारे बच्चो! जहां मैं आपको खुशी और उत्साह के साथ नए साल की शुभकामनाएं और बधाई दे रहा हूं वहां उतने ही ज्यादा जोरदार शब्दों में कहता हूं, '' **मेरे दिल के जज़्बे को समझें, मेरे दिल की भावना की कद्र करें**। आप लोग होश में आएं, समझदारी से काम लें। मोह, माया और अज्ञानता की गहरी नींद से उठें, आँखे खोलें और सच्चाई को समझें। मौत को सच व जीने को झूठ जानकर वह धन इकट्ठा करें जो अन्त समय में आपके काम आए। वह धन इस संसार से जाते समय आपके साथ जाए और आपकी सहायता करे।''

सब सन्तों ने मानस जामें की बड़ी उपमा बताई है कि केवल इस देह में रहते हुए ही हम परमात्मा से मिल सकते हैं, बाकी योनियों को यह रियायत नहीं। कबीर साहब ने मानस जामें की बड़ाई और इसमें जो सबसे ज्यादा जरूरी काम करना है जो किसी और जामें में नहीं कर सकते उसे समझाने और सिद्ध करने का यत्न इस तरह किया है:

जिस देही को सिमरे देव, सा देही भज हर की सेव।
भजो गोविंद भूल मत जाओ, मानस जन्म का ऐही लाहो।

गुरु साहब इस बात को एक जगह इस तरह बयान करते हैं:

भई प्राप्त मानुख देहुरिया, गोविंद मिलन की ऐह तेरी बेरिया।
अवर काज तेरे किते न काम, मिल साध संगत भज केवल नाम॥

प्यारे बच्चों! मैं आपको सदा ही सतसंग में बताता रहता हूं और आज जोरदार शब्दों में इसलिए दोहरा रहा हूं ताकि आप इसे ध्यान से सुनें, समझें और आज से ही इस पर अमल करना शुरू करें।

प्यारेयो! **मेरे दिल के जज्बे को समझें, मेरे दिल की भावना की कद्र करें** और मेरे लफ्जों को जीवन का अंग बनाएं। ज्यादा से ज्यादा समय अभ्यास में लगाएं, जिससे मुझे आराम मिले। मेरे महान गुरु ने मुझे जो ड्यूटी दी है उसे निभाने में मेरी मदद हो, मेरा भार हल्का हो। आप भी उन दोनों महान हस्तियों की खुशी, दया प्राप्त कर सकें।

प्यारेयो! यह मौका और समय फिर हाथ नहीं आएगा। आप इस समय को आंखें मल-मलकर रोएंगे-पछताएंगे। मैं इससे बढ़कर आपको क्या कहूं, कैसे समझाऊं! आप मेरे दिल की गहराई से निकली हुई पुकार और विनती को सुनें, मेरी बात को समझें और आज से ही इसी समय से मजबूत होकर भजन-सिमरन में लग जाएं अगर हमारी नेक कमाई होगी, जीवन साफ-सुथरा होगा, गुरु पर भरोसा होगा तो अभ्यास बड़ी जल्दी रंग लाएगा।

आओ! आज से ही हमला बोलें। गुरु के दरबार की तरफ आगे बढ़े, गुरु की प्रसन्नता प्राप्त करें; अपना लोक-परलोक सँवारें।

आपके जोड़े झाड़ने वाला

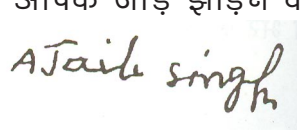

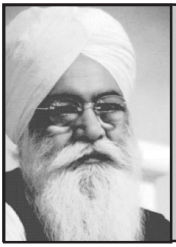

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज 12 फरवरी 1995

सतसंग की महिमा

गुरु नानकदेव जी की बानी

84 आर.बी. राजस्थान

मैं परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार करता हूं जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर रहम किया, दया की। पता नहीं यह आत्मा कितनी बार इस संसार में आती है और कितनी बार यहां से जाती है! इसने कितने पति-पत्नी और बेटे-बेटियां बनाई हैं या खुद बेटा-बेटी बने हैं? कोई यह भी नहीं जानता कि हम उस परमात्मा से कब से बिछड़े हुए हैं। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

कई जन्म भए कीट पतंगा, कई जन्म गज मीन करंगा।
कई जन्म है भी बिरख जोनि,
मिल जगदीश मिलन की वरिया, चिरनकाल रहे देह संजरिया॥

काफी समय बाद परमात्मा हमें इंसानी योनि का मौका देता है जो काम हम पशु-पक्षी, कीड़े-पतंगो की योनि में नहीं कर सकते वह इंसान की योनि में कर सकते हैं। हिन्दु महात्माओं ने इसे नर-नारायणी देह कहकर बयान किया है। यह देह नारायण ने बनाई है और वह खुद इस देह में बैठा है। देह के अंदर ही नारायण-परमात्मा के दर्शन हो सकते हैं अगर हम अंदर ही नारायण-परमात्मा के दर्शन कर लें! इंसानी जामें के तोहफे का मकसद पूरा हो जाएगा अगर हमारा पैर आखिरी सीढ़ी से नीचे चला जाए तो हम फिर चौरासी में चले जाते हैं।

आप किसी भी महात्मा की बानी पढ़कर देखें! सभी महात्मा **सतसंग की महिमा** पर जोर देते हैं। गुरु ग्रंथ साहब रूहानियत का एक खास खजाना है। यह बानी बहुत समझकर पढ़ने वाली है अगर हम सारा दिन इस बानी को तोते की तरह पढ़ते रहें लेकिन हमारा मन कहीं ओर फिरता हो और जुबान कहीं ओर हो तो इसे पढ़ने या पढ़ाने

का क्या फायदा? हम जो कुछ पढ़ते या सुनते हैं हमें उसे सोचना और समझना चाहिए कि गुरु साहब ने हमारे लिए क्या उपदेश दिया है। हममें क्या कमियां हैं, हम उन कमियों को कैसे और किसके जरिए दूर कर सकते हैं अगर हम बानी पढ़कर अलमारी में रख दें; उस रास्ते को न समझें तो पढ़ने-पढ़ाने का क्या फायदा?

अगर हम मिठाईयां या अच्छे-अच्छे खाने बनाना सीखना चाहते हैं तो हमें किसी अच्छे हलवाई या कारीगर की किताब पढ़नी पड़ेगी कि बर्फी, लड्डु कैसे बनते हैं? जब हम उस किताब की हिदायत के मुताबिक ये सब मिठाईयां बनाते हैं तो पता लगता है कि कितनी चीनी की जरूरत है। चाशनी कैसे बनानी है और उसमें कौन-कौन सा सामान पड़ेगा? इसी तरह अगर हम उस किताब को पढ़कर रख दें तो न हमारा मुँह मीठा होगा और न ही हमें उस किताब लिखने वाले पर विश्वास आएगा कि उसने सच लिखा है या नहीं?

गुरु ग्रन्थ साहब में चार चीजों की महिमा है। सबसे पहले 'नाम' की महिमा है। हम जो कुछ भी इन आंखों से देखते हैं वह सब 'नाम' ने पैदा किया है। संसार के खंड-ब्रह्मांड 'नाम' के जरिए ही चल रहे हैं। वह 'नाम' लिखने, पढ़ने या बोलने में नहीं आता। गुरु साहब कहते हैं:

गुप्ते नाम वरते विच कलयुग, घट घट हर भरपूर रहया।

कोई चोर, ठग या महात्मा इस 'नाम' से खाली नहीं। यह 'नाम' हर एक के अंदर रखा हुआ है फर्क इतना ही है कि जो लोग 'नाम' के साथ नहीं जुड़ते वे ठग्गियां, चोरियां, डाके और कत्ल करते रहते हैं लेकिन उनके अंदर भी 'नाम' है, परमात्मा है। सन्त-महात्माओं ने 'नाम' को अपने अंदर प्रकट कर लिया होता है; उनकी आत्मा को शान्ति मिली होती है। सन्त-महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं, ''प्यारेयो! हमने जीवन के चार दिन इस संसार में काटने हैं। यहां सदा नहीं रहना है, यह हमारा घर नहीं है। हमें यह घर आरजी तौर पर मिला हुआ है। हम जिस शरीर में बैठे है यह भी एक किराए का मकान है।''

हम इन आंखों से देखते हैं कि हमारे बड़े-बुर्जुग जिन जायदादों और बेटे-बेटियों से प्यार करते थे वे उन सबको छोड़कर चले गए हैं क्या उनसे कोई गलती हुई ? क्या हम इन जायदादों को साथ ले जाएंगे? कबीर साहब कहते हैं, ''इंसान मुट्ठी बंद करके जन्म लेता है और मुट्ठी खोलकर चला जाता है अगर हम इंसानी जामें में बैठकर 'शब्द-नाम' की कमाई करेंगे तो इस दुनिया में भी चार दिन सुख से बिता लेंगे और आगे जाकर परमात्मा की खुशी भी हासिल कर लेंगे।''

महात्मा कहते हैं कि हम खुद उस 'नाम' से नहीं जुड़ सकते अगर कोई यह कहे कि मैं घर बैठकर ही बी. ए., एम. ए. पास कर लूंगा, मुझे उस्तादों की डांट खाने की या फीस देने की क्या जरूरत है? ऐसा नहीं हो सकता। इसी तरह अगर कोई यह कहे कि हमें किसी महात्मा के पास जाने की जरूरत नहीं, अब कोई महात्मा है ही नहीं! यह हमारी भूल है। यह अपने आपको धोखा देने तुल्य है।

आपको पता है कि आज से दो-चार युग पहले जो बच्चा पैदा हुआ है उसे माता के दूध की और माता-पिता के पालन-पोषण की उतनी ही जरूरत थी जितनी आज पैदा हुए बच्चे को है अगर हम यह सोचें! जो आत्माएं उस समय संसार में आई उनके लिए परमात्मा ने महसूस किया कि मैं अपने प्यारों को संसार में भेजूं ताकि वे जीवों को 'नाम' के साथ जोड़ें लेकिन आज उतनी जरूरत नहीं या हम कहें कि किसी समय जरूरत नहीं थी, ऐसा नहीं है अगर उस समय जरूरत थी तो आज भी है और आगे भी होगी। गुरु साहब कहते हैं:

युग युग पीढ़ी गुरु चलेंदी।

आप कहते हैं कि मालिक के प्यारों का रास्ता कभी बंद हो ही नहीं सकता। गुरु ग्रन्थ साहब में सतगुरु और **सतसंग की महिमा** है। आप प्यार से कहते हैं:

पढ़ पढ़ थक्के शान्त न आए, बिन सतगुरु कोई नाम न पाए।
प्रभ ऐसी बनत बनाई है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि यह तरीका हमने नहीं चलाया। जिस परमात्मा ने यह संसार पैदा किया है उसने ही अपने मिलने का यह तरीका रखा है। पढ़-पढ़ाई से शान्ति नहीं मिलती अगर पढ़ने से शान्ति मिलती होती तो रावण सबसे ज्यादा पढ़ा-लिखा था, उसे शान्ति आ जाती। रावणी टीका आज भी दुनिया में मशहूर है। वह रामचन्द्र जी की पत्नी को उठाकर न ले जाता। आज भी उत्तरी भारत में हर साल उसकी नकल बनाकर जलाते हैं।

गुरु ग्रन्थ साहब में **सतसंग की महिमा** है। सतसंग के बिना हमें समझ नहीं आती, हमें हमारी गलतियों का पता नहीं चलता। महात्माओं ने सतसंग पर बहुत जोर दिया है। हम तो यही कहते हैं कि हम हमेशा सतसंग में रहते हैं। हम सोचते हैं कि घर में दस आदमी रहते हैं वह भी सतसंग है। सामाजिक भीड़-भाड़ भी सतसंग है। इंसानों ने ही इकट्ठे होना है लेकिन नहीं, सत्य वह परमात्मा है जो कभी नाश या फनाह नहीं होता। जो परमात्मा के साथ जुड़कर परमात्मा को अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं वे भी सत्य का रूप हो जाते हैं।

हमने महात्माओं की संगत का फायदा उठाना है, संगत का हमारे मन पर बहुत असर पड़ता है अगर हम चोरों की संगत करेंगे तो हमें चोरी करने की आदत पड़ जाएगी, अगर बीड़ी पीने वालों की संगत करेंगे तो बीड़ी पीने की आदत पड़ जाएगी, अगर शराबी-कबाबी लोगों की संगत करेंगे तो शराब पीने की आदत पड़ जाएगी। कोई भी मां के पेट से कुछ सीखकर नहीं आता, संगत ही उसे वैसा बना देती है।

परिवार में जिस चीज का प्रभाव होता है बच्चों पर उसका असर होता है। जिस परिवार में शराब, चोरी व बुराई का बोलबाला नहीं होता उस परिवार में पैदा होने वाले बच्चे अपने मां-बाप की नकल करते हैं। जिस परिवार में पहले से ही शराब, मीट और लड़ाई-झगड़े का बोलबाला है उस परिवार के बच्चे साधुपना कैसे अपना सकते हैं? इसमें बच्चों का कोई कसूर नहीं होता उन्हें अच्छी सोहबत नहीं मिली होती।

गुरु साहब प्यार से कहते हैं कि किसी महात्मा की सोहबत-संगत करें तो ही आपको पता चलेगा कि आपके अंदर क्या कमियां हैं, आपको किस तरफ जाना है और आप किस तरफ जा रहे हैं?

यह उन महात्माओं की बानी है जो पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड पर चढ़े, परमात्मा से मिलाप किया। उन्हें रास्ते में जो-जो रुकावटें आई, हमारी गाईडेन्स के लिए उन्होंने अपना रूहानी रिकार्ड गुरु ग्रन्थ साहब में दर्ज कर दिया ताकि आने वाले प्रेमी लोग इसे पढ़कर फायदा उठाएं। पहले के महात्माओं ने बहुत कठिन साधना की। सन्तों के दरवाजों पर जाकर जूते झाड़े, क्या वे घर बैठकर आराम नहीं कर सकते थे?

सतगुरु विच आप रखयोन, सब सुणयो लोग सवाया।

हम महात्मा को नहीं बना सकते। महात्मा संगत बनाता है। यह तरीका परमात्मा ने खुद ही रखा हुआ है। गुरु साहब कहते हैंः

जहं सतगुरु तहं सतसंग बनाई।

महात्मा हम भूले हुए जीवों को इकट्ठा करके बिठाते हैं। महात्मा किसी खास जाति, मुल्क या समाज के लिए नहीं आते। वे तो सारे संसार को अपना मुल्क अपना घर और सब जातियों को अपना समझते हैं। महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं देखो प्यारेयो! परमात्मा एक है। उससे मिलने का साधन व तरीका एक है फिर किसी से क्या विरोध, कैसा झगड़ा? इकट्ठे होकर बैठें, 'नाम' जपें।

होए एकत्र मिलो मेरे भाई, दुविधा दूर करो लिव लाई।
हर नामे की होवो जोड़ी, गुरुमुख बैठो सफा बिछाई॥

हमारे सतगुरु महाराज कहा करते थे, ''एक मकान में हजारों की संख्या में साधु रहे सकते हैं क्योंकि वे साधना करते हैं लेकिन एक गांव में दो सांड नहीं रह सकते क्योंकि उनमें तालीम व समझ नहीं।''

सन्त-महात्मा कहते हैं कि आप भूले हुए हैं; आपने ऐसे ही दीवारें खड़ी की हुई हैं कि मैं हिन्दू, मुसलमान, सिख या इसाई हूं। मैं अमेरिका

या हिन्दुस्तान का रहने वाला हूं। प्यारेयो! परमात्मा एक है। मुझे सब समाजों में जाने का मौका मिला है। मैं एक अमीर से लेकर एक झोपड़ी वाले से भी मिला हूं। सब एक ही तरीके से जन्म लेते हैं। सबके अंदर एक जैसा खून व पसीना है; सब प्रान्तों की भाषाएं जरूर अलग-अलग हैं। गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं

न्यारे न्यारे देसन के भेद भरमाओ है।

हम सबकी एक जैसी आंखें व एक जैसी जुबान है। हम सबके एक जैसे हाथ-पैर हैं। कोई केश रखकर खुश है तो कोई सिर मुंडवाकर खुश है। कोई मुंडिया तो कोई सन्यासी हो जाता है।

सन्त-महात्मा न तो कोई जाति बनाने के लिए आते हैं और न ही पहले बनी तोड़ने के लिए आते हैं। वे कहते हैं कि आप अपनी-अपनी जाति में रहें, अपने-अपने रीति-रिवाज करें; यह आपको मुबारक हैं लेकिन हम आपको साधना का जो तरीका बताते हैं आप उसके ऊपर चलें आपका फायदा होगा। परमात्मा कहीं बाहर नहीं, परमात्मा न जंगलों में छिपा है और न ही किसी खास मंदिर या मस्जिद में छिपा है। परमात्मा हम सबके अंदर छिपा हुआ है। कबीर साहब कहते हैंः

ज्यों तिल माहीं तेल है, ज्यों चकमक में आग।
तेरा प्रीतम तुझमें, जाग सके तो जाग॥

जैसे पत्थर में अग्नि है। तिल के अंदर तेल है। फूल में खुशबू है। शीशे में रोशनी है इसी तरह वह परमात्मा राम तेरे अंदर है अगर तू उसे खोजना चाहता है तो खोज सकता है। कबीर साहब कहते हैंः

वस्तु कहीं ढूढे कहीं, कह विध आवे हाथ।
कहे कबीर तब पाईए, जद भेदी लइए साथ॥

अगर हमारी कोई वस्तु यहां सतसंग में खो जाए! हम उसकी तलाश कहीं दो मील दूर जाकर करें, चाहे जितनी भी कोशिश कर लें वह वस्तु हमें नहीं मिलेगी। परमात्मा हमारे अंदर है लेकिन हम उसकी तलाश जंगलों पहाड़ों में करते हैं। अपना घर-बार, पत्नी व बाल-बच्चे

छोड़ देते हैं अपनी कमाई छोड़कर लोगों पर निर्भर करते हैं। घर की बीवी के हाथ का खाना छोड़कर बाहर अनेकों के आगे हाथ फैलाते हैं और कहते हैं कि हम सन्यासी हैं, साधु हैं। कबीर साहब कहते हैंः

गृही का टुक्कर बुरा, नौं नौं उंगल दाँत।
भजन करे ते उबरे, नहीं तो कड्डे आँत॥

किसी का खाना बहुत आसान है लेकिन उसका हिसाब देना बहुत मुश्किल है। एक बार जोगी मांग रहे थे, गुरु अमरदेव जी ने कहाः

जोगी होए जग भवे, घर घर भिखया ले।
दरगाह लेखा मंगिए, किस किस उत्तर दे॥

सन्त-महात्मा कहते हैं कि प्यारेयो! परमात्मा जोत रूप नाद रूप होकर हमारे अंदर विराजमान है। यह इस तरह है जैसे हम शाम के समय गांव से बाहर जाएं, बाहर तूफान आ जाए! हम घर का रास्ता भूल जाते हैं। फिर किसी जगह बैठकर सोचते हैं कि कहीं से कोई प्रकाश दिखाई दे, कोई आवाज सुनाई दे या कोई कुत्ता भौंक रहा हो। जब हमें कोई आवाज सुनाई देती है तो हमें हमारे घर की स्थिति का पता लग जाता है। हम उस तरफ चल पड़ते हैं अगर उस समय हमारे हाथ में टार्च हो तो हम गड्ढे या झाड़ियों में नहीं फंसेंगे आसानी से रास्ता देख सकेंगे। उस समय आवाज ने हमें रास्ता दिखाया और प्रकाश से सफर आसान हुआ। गुरु साहब प्यार से कहते हैंः

भेदी लइए साथ ते दित्ती वस्तु लखाए।
कोट जन्म का पंद सी, पल में पहुंचा आए॥

परमात्मा हमारे अंदर बैठकर हमें आवाज दे रहा है। परमात्मा ने रास्ते में प्रकाश भी रखा हुआ है। वह राम-नाम की ज्योत हमारे अंदर है। गुरु नानकदेव जी उसे गुरुबानी, अकथकथा और सच्ची बानी भी कहते हैं। वह बानी सबके अंदर समाई हुई है।

गुरु की बानी सब माहे समानी।
आप सुनी ते आप बखानी॥

महात्मा दिन-रात उस बानी को सुन रहे हैं। हमें उस बानी को सुनने का तरीका महात्मा से पता लगता है। महात्मा ने अपनी जिंदगी में इस मसले को हल किया होता है। उन्हें यह तरीका उनके गुरुओं से मुफ्त मिला होता है और वे भी इसे मुफ्त में बांटते हैं, कोई फीस नहीं लेते लेकिन इसके ग्राहक बहुत कम होते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

नाम रतन धन कोठरी, खान खुली घट माहे।
सेत मेत ही देत हूं, ग्राहक कोई नाहे॥

महात्मा हमें अंधविश्वास नहीं देते। वे कहते हैं कि मीट, शराब, और बुरे कर्म छोड़ो। अपनी कमाई करके खाओ क्योंकि अपनी कमाई खाए बिना हम अंदर नहीं जा सकते। वे हमें बैठने की युक्ति बताते हैं उस आवाज और प्रकाश से जोड़ते हैं। वे 'नामदान' के समय पूछते हैं क्यों भाई! कैसा प्रकाश देखा, कैसी आवाज सुनी? हम लोग इकबाल भी करते हैं। उन्हें अंधविश्वास न तो विरासत में मिला होता है और न ही वे अपने सेवकों को अंधविश्वास देते हैं। इसके बाद सेवक की भी ड्यूटी बनती है अगर सेवक अपनी ड्यूटी निभाता है तो वह अपनी जिंदगी में ही देख लेता है कि उसके अंदर किस तरह का बदलाव आया है।

महात्मा प्यार से कहते हैं आप यह मत सोचें कि हमने बुरे कर्म करके अपनी जिंदगी बिगाड़ ली है। आप देखें! हम खेत में पानी लगाते हैं अगर पीछे कोई नक्का टूट जाता है तो क्या हम यह सोचकर बैठ जाते हैं कि अब यह टूट गया हम इसे क्यों बांधे? हम भागकर जाते हैं कहते हैं कि जो पानी बचा है वह तो खेत में जाएगा। इसी तरह हमारे पास जो समय बचा है हम उसे अच्छी तरफ लगा लें अगर कोई इंसान ऐसा करता है तो हम कहते हैं, ''नौं सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली।'' प्यारेयो! जब वह चल ही पड़ा वही समय उसके लिए अच्छा है।

अगर चोर ने एक बार चोरी कर ली। वह जेल चला गया, उसने कष्ट सह लिया; जेल से आने के बाद उसे सोचना चाहिए कि बाकी की जिंदगी तो आराम से बिताऊं।

सन्त-महात्मा हमें समझाते हैं कि पिछले जन्मों की बिगड़ी हुई हम इस इंसानी जामें में सुधार सकते हैं। परमात्मा ने हमें अपने पास बुलाने के लिए अपनी आवाज और प्रकाश रखा हुआ है। समय-समय पर महात्माओं ने इस संसार में आकर उसे बानी, धुर की बानी, वर्ड या लोगास कह दिया। हमारी किसी लफ्ज के साथ बहस नहीं, हमारा मतलब तो उस ताकत से है। वाहेगुरु-वाहेगुरु करने से वाहेगुरु नहीं मिलता। राम-राम कहने से राम नहीं मिलता। राम-राम तो तोता भी करता है लेकिन जब वह जंगल में जाता है तो राम-राम कहना भूल जाता है। हम जिस लफ्ज का उच्चारण कर रहे हैं हमें उसमे जाकर मिलना है।

राम राम सबको कहे, कहयां राम न होई।
गुरु प्रसादी राम मन वसे, तां फल पावे कोई॥

हम किसी महात्मा की कृपा से अंदर जाकर उस रमत राम से मिलते हैं। वह राम हर घट हर पशु पक्षी को सतह दे रहा है। कबीर साहब ने चार प्रकार के राम के नामों का उच्चारण किया हैं:

एक राम दशरथ का बेटा, एक राम घट घट में बैठा।
एक राम का सगल पसारा, एक राम इन्हूं से न्यारा॥

एक राम त्रेता युग में हुआ, उसने हिन्दुस्तान में बहुत अच्छा अनुशासन दिया। उनके राज्य में बहुत अमन था, हर कोई फरियाद कर सकता था। दूसरा राम मन है जो पल में यहां है तो पल में अमेरिका, इंग्लैंड में है; देह रूप में यहां सतसंग में बैठे हैं लेकिन मन दौड़ता रहता है। तीसरा राम वह है जिसने सारी दुनिया की रचना पैदा की है। सन्त जिस राम का जिक्र करते हैं वह राम चौथे पद सच्चखंड में बैठा है; वह हर एक में रमा हुआ है, वह लिखने पढ़ने व बोलने में नहीं आता। वह राम घर-बार, बेटे-बेटियां छोड़ने या कौम बदलने से नहीं मिलता।

आपके आगे गुरु नानकदेव जी का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है गौर से समझने वाला है। हमने सबसे पहले यह सोचना है कि हम यहां सतसंग में किसलिए बैठे हैं?

आतम महि राम राम महि आतम चीनस गुरु बीचारा॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''हमारी आत्मा उस राम परमात्मा की अंश है। यह परमात्मा में और परमात्मा इसमें है। बीज में पेड़ है और पेड़ में बीज है। मछली पानी में रहते हुए भी प्यासी है, उसके नीचे-ऊपर, दाएं-बाएं पानी है लेकिन वह फिर भी प्यासी है। मछली अपनी प्यास तभी बुझा सकती है जब वह पलटा खाती है।''

इसी तरह वह राम हमारे अंदर है क्योंकि हमारी आत्मा उसकी अंश है लेकिन जब तक हमारा मन इस संसार के विषय-विकारों से पलटा नहीं खाता तब तक हम उस राम से नहीं मिल सकते। कहीं हमारे दिल में ख्याल हो कि वह राम तो हमारे अंदर है फिर वह हमसे क्यों नहीं मिलता? वह राम तो हमसे मिलने के लिए तैयार बैठा है लेकिन अभी हम उससे मिलने के लिए तैयार नहीं। हमें इस बात की समझ तब आती है जब हम किसी ऐसे महात्मा के पास जाते हैं जिसने अपनी जिंदगी में इस मसले को हल किया होता है।

आप यह मत सोचें! यह महात्मा हिन्दु है या सिख है; यह हिन्दुस्तान का रहने वाला है या अमेरिका का रहने वाला है। हमने महात्मा से कोई रिश्ता-नाता नहीं करना, उसके साथ खाना नहीं खाना। हमने तो उससे तालीम लेनी है। स्कूल, कालेज में हमारे टीचर हिन्दु, मुसलमान, सिख और इसाई भी होते हैं। क्या कभी किसी ने ऐतराज किया है कि मैं सिख हूं इसाई से नहीं पढूंगा या मैं इसाई हूं सिख से नहीं पढूंगा? हमने टीचर से सिर्फ तालीम लेनी है। इसी तरह हमने महात्मा से रास्ता लेकर उस रास्ते पर चलना है। कबीर साहब कहते हैं:

जात ना पूछो साध की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मुल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥

यह शरीर एक म्यान है। महात्मा ने अपने अंदर 'राम-नाम' को प्रकट किया होता है, हमारा ताल्लुक उस 'राम-नाम' के साथ है। सन्त जब तक देह में रहते हैं वे यह नहीं कहते कि हम आपके गुरु या पीर

हैं। वे तो यही कहते हैं कि हमारे माँ-बाप ने जो नाम रखा है आप हमें उस नाम से बुलाएं चाहे किसी और नाम से बुलाएं, वह खुश हैं। जब अंदर का मार्ग किताब की तरह खुल जाता है तो कोई शक नहीं रहता।

अमृत बाणी शबद पछाणी दुख काटै हौं मारा॥

आप प्यार से कहते हैं कि उस बानी में अमृत है लेकिन हमारा प्याला उलटा है। चाहे सारी जिंदगी बारिश होती रहे, उस प्याले के अंदर पानी की एक बूंद भी नहीं जाएगी। हमने अपने प्याले को सीधा करना है। गुरु साहब कहते हैं:

औंधे भांडे कछु न समावे, सीधे पवे अमृत धार।

आपके अंदर अमृत की धारा गिर रही है लेकिन काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के डाकू इस अमृत की धारा को पी रहे हैं; आत्मा कमजोर है। गुरु साहब कहते हैं:

अमृत हर हर नाम है मेरी जिंदड़िए।
मन सूखा हरया होय राम॥

पेड़ की जड़ जमीन के अंदर होती है लेकिन इंसान की जड़ दिमाग में होती है। हम दिमाग से सतह लेते हैं। महात्माओं ने हमारे सिर को उलटा कुआं कहकर बयान किया है। पलटु साहब कहते हैं:

उलटा कुंआ गगन में, तिसमें जले चिराग।
तिसमें जले चिराग, बिन रोगन बिन बाती॥

इस उलटे कुएं में बिना तेल, बिना बत्ती के चिराग जल रहा है। गुरु साहब कहते हैं:

राम नाम है जोत सवाई, तत गुरुमत काड लीजे।

यह ज्योत औरत-मर्द दोनों के अंदर जल रही है, यहां किसी जाति का सवाल नहीं। हम मन के पीछे लगकर एक-दूसरे से लड़ते-झगड़ते हैं अगर अंदर जाएं तो कोई शक नहीं रहता। जब महात्मा सच्चखंड से

आते हैं, उनके सेवक हिन्दु, मुसलमान, सिख, इसाई सभी धर्मों और सभी मुल्कों के होते हैं अगर यह मसला एक भाषा में लिखा जाने वाला होता तो सारे मुल्क कैसे फायदा उठा सकते थे? यह किसी एक भाषा का लफ्ज नहीं, यह बिना लिखा कानून बिना बोली भाषा है। इसकी डोरी महात्मा के पास होती है। गुरु साहब कहते हैः

गुरु का शब्द गुरु थाह टिके, और थाह प्रकट न होए।

पूरे गुरु की निशानी है कि जब वह 'नाम' देता है तो प्रेमियों को अनुभव होता है अगर अनुभव नहीं होता तो वह पूरा सन्त नहीं। महात्मा हमें वर्णात्मक और धुनात्मक दो प्रकार का 'नाम' देते हैं। 'वर्णात्मक नाम' लिखा व पढ़ा जाता है यह अलग-अलग भाषा में है और 'धुनात्मक नाम' लिखने पढ़ने व बोलने में नहीं आता। वर्णात्मक नाम धुनात्मक नाम के साथ जुड़ने का एक जरिया है। 'वर्णात्मक नाम' एक सड़क है, जुड़ने का साधन है। 'धुनात्मक नाम' एक मंजिल है।

महात्मा हमे 'नामदान' के समय बताते हैं कि नाम का सिमरन किस तरह करना है, किस तरह फैले हुए ख्याल को दोनों आंखो के बीच तीसरे तिल पर लाना है। पहले हमारे पैर सुन्न होते हैं फिर धीरे-धीरे शरीर सुन्न होना शुरू हो जाता है, हम तीसरे तिल पर पहुंच जाते हैं। गुरु साहब जपजी साहब में कहते हैंः

जे को पावे तिल का मान।

तिल की बड़ी महानता है। किसी महात्मा ने इसे तीसरी आंख, किसी ने घर-दर तो किसी ने दिव्यचक्षु कहा है। इसे किसी भी नाम से पुकार लें मसला तो दोनों आखों के दरमियान तिल तक पहुंचने का है; जहां से यह आवाज आ रही है। हम जैसे-जैसे पहाड़ी के नजदीक पहुंचते जाते हैं वैसे-वैसे सर्दी बढ़ती जाती है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की स्थूल गांठ हमारी आंखो के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी ब्रह्म में है। जब हम तीसरे तिल से आगे चले जाते हैं वहां इनका नामो-निशान नहीं होता, वहां हमारी आत्मा को अमृत मिल जाता है।

जो खुशकिस्मत दिन-रात इस आवाज को सुनते हैं उन्हें यह दुःख है कि हम कभी पैदा होते हैं, कभी मरते हैं। आप बच्चों की, बुजुर्गों की हालत देख लें मरते समय और पैदाईश के समय क्या हालत होती है?

नानक हौमे रोग बुरे, नानक हौमे रोग बुरे॥

अब गुरु नानकदेव जी हमारे और परमात्मा के बीच हौमे और अहंकार की रुकावट का जिक्र करते हैं। हम दिन-रात कहते हैं, ''मैं आलम हूं, मैं फाजल हूं, मेरी इतनी जायदाद है, मेरा इतना बड़ा समाज है।'' हम जहां भी निगाह मारते हैं सबको यही बीमारी लगी हुई है कि मेरे जैसा कोई नहीं। आसा जी की वार में आता है कि यह जीव हौमे में आता और जाता है। हौमे में ही पैदा होता और मरता है।

हौमे दीर्घ रोग है, दारु भी इस माहे।
कृपा करे जे आपणी, गुरु का शब्द कमाहे॥

आप कहते हैं, ''अगर बीमारी है तो दवाई भी है। परमात्मा जिस पर कृपा करता है उसे किसी महात्मा के पास भेजता है। महात्मा उसे 'शब्द-नाम' की कमाई का साधन बताते हैं। जब हम तीसरे तिल से ऊपर चले जाते है वहां जाकर पता लगता है कि हमारा तो कुछ भी नहीं है; सब कुछ परमात्मा का है।''

एक दिन मौहम्मद साहब के दिल में ख्याल आया कि मेरे जाने के बाद मेरे शिष्य गद्दी के लिए झगड़ा न करें क्योंकि सन्त-महात्माओं के जाने के बाद ऐसा हो जाया करता है; वैसे महात्मा शक नहीं रहने दिया करते। मौहम्मद साहब ने अपने मुख्य शिष्यों से पूछा, ''बताओ! तुम्हारा क्या-क्या है?'' सबसे पहले हज़रत उमर उठा। वह गिनाने लगा कि मेरे इतने बेटे-बेटियां है, मेरे पास इतने ऊंट हैं, मेरे पास इतना धन है और मैं इतना पढ़ा-लिखा हूं। यह सब बताने में उसने एक घंटा लगा दिया। फिर मौहम्मद साहब ने हजरत अली की तरफ इशारा किया। उसने उठकर कहा, ''एक खुदा है एक तू है। खुदा भी तेरे जरिए देखा है।''

मौहम्मद साहब ने अपनी जगह उपदेश देने के लिए हजरत अली से कहा था। मौहम्मद साहब के समझाने का भाव था कि हम किन बातों में फंसे हुए हैं क्या हमने कभी सोचा है कि जब मौत आएगी तो बेटे-बेटियां, पढ़-पढ़ाई या धन-दौलत साथ जाएगी? यह मकान (शरीर) भी अपना नहीं जिसमें हम बैठे हैं।

जहं देखां तहँ एका बेदन आपे बखसै शबद धुरे।
आपे परखे परखणहारै बहुर सूलाक न होई॥

परमात्मा ने सब कुछ अपने हाथ में रखा हुआ है कि किसे 'शब्द-नाम' के रास्ते पर डालना है, किसे पूर्ण महात्मा के चरणों में भेजना है। परमात्मा ही परखता है। पिछले जमाने में चांदी के सिक्के होते थे। जब खजांची के पास पैसे जमा कराने जाते, वह खोटे सिक्के पर टक लगा देता ताकि लेने वाले को पता लग जाए कि यह खोटा सिक्का है।

खरे परख खजाने पाए, खोटे भरम भुलामणया॥

इस जन्म के बाद हमारी अच्छी तरह परख होनी है। कहीं हमारे दिल में ख्याल हो कि हम जो कुछ कर रहे हैं उसे परमात्मा नहीं देख रहा। हम जो भी अच्छा या बुरा करते हैं परमात्मा सब देखता है। हम केवल अपने आपको धोखा देते हैं कि कौन देख रहा है?

'लेखे आवे सांस ग्रास'।

अगर हमने कोई पुण्य करना हो तो हम भाईयो, पंडितो से जाकर पूछते हैं कि कौन सा दिन अच्छा है? पत्रियां निकलवाते हैं लेकिन पाप करते समय कभी किसी ने किसी से सलाह नहीं की। बाप बेटे से सलाह नहीं करता। यही सोचते हैं कि यह मौका हाथ से क्यों जाने दें लेकिन प्यारेयो! हम पाप और पुण्य दोनों का बदला चुका रहे हैं।

पुण्य का बदला अच्छे घर में जन्म हो जाता है, बुद्धि अच्छी होती है; हम अच्छी तरफ लग जाते हैं। पाप का बदला बुरे घर में जन्म हो जाता है, आगे भी बुरे कर्म ही करते हैं और अनेकों ऐब लगा लेते हैं।

बुरे कर्मों की सजा बीमारियों का दुख भोगना है। अच्छे कर्मों का ईनाम तंदरूस्त रहना, धनी होना है। हम न तो अच्छे कर्म भोगकर सुखी हैं और न ही बुरे कर्म भोगकर सुखी हैं। जहां से हमारी आत्मा बिछड़ी है उस राम से मिलकर ही हम सुखी हो सकते हैं। वह परमात्मा आप ही परखता है जो खरे उतरते हैं उन्हें अपने खजाने में दाखिल कर लेता है बाकियों को टक लगाकर कहता है कि ये खोटे हैं।

जिनकौ नदर भई गुर मेले प्रभ भाणा सच सोई॥

गुरु नानक साहब कहते हैं परमात्मा जिस पर अपनी मीठी नजर करता है उसे महात्मा के चरणों में भेजता है अगर वह मीठी नजर न करे तो चाहे महात्मा घर में ही पैदा क्यों न हो जाए! चाहे पड़ोस में ही रहने क्यों न लग जाए! उस तरफ कभी ख्याल ही नहीं जाएगा।

भागहीन गुरु ना मिले, निकट बैठया नित पास।

कबीर साहब के अनुराग सागर में आता है कि उनका एक सुपच नाम का सेवक था। कबीर साहब उसे लेने के लिए आठ जन्म तक उसके पीछे आते रहे। वह आठवें जन्म में धर्मदास के जामें में आया। हिन्दुस्तान में वह धनी धर्मदास कहलवाता था। धर्मदास ने कबीर साहब से बहुत से सवाल किए। अनुराग सागर में धर्मदास के सवाल और कबीर साहब के जवाब हैं। धर्मदास का लड़का नारायणदास 'नाम' की तरफ नहीं आया। धर्मदास के दिल में ख्याल आया कि मेरा लड़का काल की जाड़ में क्यों जाए, नर्कों का भागी क्यों बने?

धर्मदास ने कबीर साहब से कहा, ''सच्चे पातशाह! क्या यह आपके बस में नहीं कि आप इसे 'नाम' दें?'' कबीर साहब ने कहा, ''यह

किसी के बस की बात नहीं यह सब परमात्मा ने अपने हाथ में रखा हुआ है, जिनके कर्म धुर से होते हैं वे ही 'नाम' की तरफ आते हैं।'' जब परमात्मा मेहर करता है तभी हमारी समझ में आता है कि हम किसी महात्मा के पास जाकर फायदा उठाएं।

जिन धुर कर्म पाया से नाम हर के लागे।

आप गुरु नानकदेव जी की बानी पढ़कर देखें! आप जिस घर में पैदा हुए आपके माता-पिता आपको थप्पड़ ही मारते रहे। लोगों के पास जाकर सिफारिश करते कि इसे समझाएं यह काम में दिल नहीं लगाता अगर वे यह जानते होते कि कुल मालिक हमारे घर में आया है तो क्या वे ऐसा करते? परमात्मा सुजाखा है, हम अंधे हैं। अंधे की ताकत नहीं कि वह सुजाखे को पकड़ ले।

पौण पाणी बैसंतर रोगी रोगी धरत सभोगी॥
मात पिता माया देह से रोगी रोगी कुटंब संजोगी॥

आप प्यार से कहते हैं, ''हम जो कुछ भी इन आंखों से देखते हैं यह सब नाशवान है। धरती, पवन, पानी और हमारे माता-पिता सबको ही जन्म-मरण का रोग लगा हुआ है। यहां पर सदा किसी ने नहीं रहना, जो यहां भोग भोगते रहे हैं, ऐशो-इशरतें करते रहे हैं मौत ने उन्हें भी नहीं छोड़ा।''

रोगी ब्रह्मा बिसन सरूद्रा रोगी सगल संसारा॥

ब्रह्मा संसार को पैदा करता है। विष्णु संसार का पालन करता है और शिव संहार करता है। ये सब भी आरजी भोग भोगकर समाप्त हो जाते हैं। हम इन देवी-देवताओं की भक्ति में लगे हुए हैं, जब ये खुद मौत से नहीं बचे तो हमें मौत से कैसे बचा सकते हैं? संसार में कोई भी सदा नहीं रहता। सन्त-महात्मा किसी देवी-देवता की निन्दा नहीं करते बल्कि वे कहते हैं आप अंदर जाकर खुद देखें कि देवी-देवता कहां बैठे हैं लेकिन हम अंदर नहीं जाते और जो देवी-देवता हमने खुद बनाए हैं उन्हीं को पूजने लग जाते हैं।

मैं जब पंजाब से आया तो मैंने मांझूवास में जमीन खरीदी। वहां के चौधरी मेरे पास इकट्ठे होकर आए और कहने लगे कि हम देवी-देवताओं को पूजते हैं, हमने उनके लिए ऊँची जगहों पर स्थान बनाए हुए हैं। हम उस स्थान पर माथा टेकते हैं लेकिन कुत्ते वहां पेशाब करते हैं। ये देवी-देवता न तो हमारे साथ बात करते हैं और न ही कुत्तों को हटाते हैं आप हमें कोई रास्ता दिखाएं? मैंने उनसे कहा, ''यह अंधविश्वास है अगर इनमें कुछ हो तो ये जरूर बोलें। आप ही किसी चीज को बना लें फिर उसके आगे माथा टेककर मुक्ति का साधन पूछें यह अज्ञानता नहीं तो और क्या है?''

महाराज सावन सिंह जी दोआबा के इलाके की मिसाल दिया करते थे। वहां एक जाट की थोड़ी सी जमीन थी, उसके खेत में माता रानी का स्थान बना हुआ था। लोग जब देवी की पूजा के लिए आते तो जाट की फसल खराब हो जाती थी। जाट नाराज होकर उन लोगों से कहता कि तुम मुझ गरीब की फसल क्यों खराब करते हो? लोग उसे ताना मारते कि देवी तेरा बुरा करेगी।

एक दिन जाट ने गांव के मिस्त्री से सलाह की कि लोग देवी को पूजने आते हैं तो मेरी फसल को खराब कर जाते हैं। मैं बहुत दुःखी हूं तू मेरी मदद कर। मिस्त्री अंधविश्वास को नहीं मानता था। पड़ोस में शहीदों का छप्पड़ था। उन दोनों ने मिलकर सलाह की और उसी रात माता की मढ़ी को बैलगाड़ी पर लादकर शहीदों के छप्पड़ में रख आए। सुबह जाट ने कंबल ओढ़कर गांव के लोगों से कहना शुरू कर दिया कि रात को बहुत आतिशबाजियां चली, बहुत ढोल-ढमाके बजे। सबने कहा कि हमने तो कुछ नहीं सुना। उसने कहा कि आप लोग सोए हुए थे इसलिए आपको सुनाई नहीं दिया।

इतने में मिस्त्री भी वहां आ गया। वह कहने लगा, ''क्या कल की रात भी कोई सोने वाली रात थी? रात को ढ़ोल-ढमाके बजे। देवी चीखें मार-मारकर बहुत रोई लेकिन शहीदों ने एक नहीं सुनी। वे देवी को

ब्याहकर बैलगाड़ी में अपने साथ लेकर चले गए।'' यह सुनकर देवी को मानने वाले लोग बहुत परेशान हुए उन्होंने जाकर देखा तो सच में ही वहां पर बैलगाड़ी के निशान थे। वे लोग देवी को पूजने के लिए शहीदों के छप्पड़ जाने लगे। इस तरह जाट ने युक्ति से अपनी जमीन बचा ली।

मैं बताया करता हूं मेरे पिछले गांव का वाक्या है। मेरे खेत के साथ एक बहुत बड़ा पेड़ था। मालवे की औरतें रोज सुबह उस पेड़ को पूजने आया करती थी। उस समय मेरे पास एक डी.एस.पी. और थानेदार बैठे हुए थे, वे सन्तमत को मानने वाले थे। जब उन्होंने मालवे की औरतों को पेड़ की पूजा करते हुए देखा तो पूछा, ''यह सब क्या हो रहा है?'' मैंने कहा कि यह सब अंधविश्वास है।

इतने में वहां एक मजहबी सिख आया उसने देखा कि सब औरतें देवता की पूजा कर रही हैं, मैं भी पूजा कर आऊँ। वह घर से पानी और थाली लेकर आया, थाली देखकर कुत्ते भी उसके पीछे चल पड़े। वे लोग जहां पूजा कर रहे थे वहां कुत्तों ने पेशाब कर दिया। जो लोग वहां हलवा वगैरहा चढ़ाते हैं, पेड़ न तो उन्हें कुछ कहता है और न ही कुत्तों को पेशाब करने से हटाता है।

जब मैं उस पेड़ को काटने लगा तो जो भी वहां आता मुझसे यही कहता, ''बाबा जी! यह पेड़ आपको कुछ कहे ना।'' मैं 'नाम' देते समय कहता हूं कि जिसके पास कोई धागा या तावीज है वह अपने भूत या देवता को बुला ले अगर वह अभी नहीं आया तो बाद में क्या आएगा?

हर पद चीन भए से मुकते गुर का शबद वीचारा॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि 'शब्द-नाम' की कमाई करने वाले ही मुक्त होते हैं। वह शब्द गाने-बजाने वाला नहीं। आप कहते हैंः

उत्पत्त शब्दे परले होवे, शब्दे ही फिर उत्पत्त होवे॥

उस शब्द ने दुनिया की रचना पैदा की है। वह शब्द बिना किसी यंत्र के बजता है। बाहर के बाजे बजाने वाला थक जाएगा या बाजे की

सुर घड़ी दो घड़ी में खराब हो जाएगी। उसे अनहद शब्द कहा गया है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

शब्दे धरती शब्दे आकाश, शब्दे शब्द भया प्रकाश।
सगली सृष्टि शब्द के पाछे, नानक शब्द घटे घट आशे॥

आप कहते हैं, ''उस 'शब्द' ने सूरज, चन्द्रमा और धरती पैदा किए हैं। वह 'शब्द' हर घट देह वजूद के अंदर है।''

रोगी सात समुंद्र सनदीआ खंड पताल से रोग भरे॥
हर के लोक से साच सुहेले सरबीं थाईं नदर करे॥

आप कहते हैं, ''ओम तक की सृष्टि प्रलय में गिर जाती है। आखिर सच्चखंड से नीचे सभी खंड-पाताल समय पाकर गिर जाते हैं। परमात्मा के प्यारे परमात्मा में मिल जाते हैं, वे संसार में जहां भी जाते हैं उनकी आत्मा को शान्ति होती है। उनकी आत्मा विषय-विकारों या दुनिया की तृष्णा में नहीं तड़पती। ऐसा नहीं कि पैसे से शान्ति आ जाएगी, यह हमारी भूल है।''

लख जोड़े करोड़ जोड़े, मन परे-परे को होड़े रे।

पैसा आने से पहले की शान्ति भी भंग हो जाती है अगर यह सोचें! पढ़-पढ़ाई से शान्ति आ जाएगी तो यह भी भूल है। जितना ज्यादा पढ़ लेते हैं उतना ही एक-दूसरे से बहस करने लग जाते हैं। पढ़ने का फायदा तभी है जब हम शान्ति प्राप्त करके दूसरों को समझाएं कि धर्मग्रंथों में यह सब लिखा है। महात्मा पढ़ने को बुरा नहीं कहते।

कबीर साहब की हिस्ट्री में आता है कि सरबाजीत सबसे यही कहता था कि मैंने संसार के सभी पंडितों को हरा दिया है। सरबाजीत की माता कबीर साहब की नामलेवा थी। उसने कहा, ''बेटा! अगर तू कबीर साहब को हरा देगा तो ही मैं तुझे सरबाजीत मानूंगी।''

उन दिनों आज की तरह कारें, बसें और हवाई जहाजों के साधन नहीं थे। वह बैल पर किताबें लादकर कबीर साहब के घर गया। कबीर

साहब घर पर नहीं थे। कबीर साहब की लड़की कमाली मिली। सरबाजीत ने पूछा, ''क्या कबीर साहब का घर यही है?'' कमाली ने कहाः

कबीर का घर आसमान ते, जहां सिलहली गैल।
पांव न टिके पपील दा, ते पंडित लादे बैल॥

क्या तू कबीर साहब को इंसान समझता है? कबीर साहब सतपुरुष हैं, सच्चखंड में रहने वाले हैं। वह देह करके संसार में हैं। वहां तो चींटी भी नहीं पहुंच सकती और तुम बैल पर किताबें लादकर आए हो। इतने में कबीर साहब आ गए। सरबाजीत ने कबीर साहब से कहा, ''मैं सरबाजीत हूं। मैंने सारे संसार के पंडितों को जीत लिया है, आपसे भी बहस करने आया हूं।'' कबीर साहब ने कहा, ''मैं इतना पढ़ा-लिखा नहीं हूं, मैंने कभी किसी से बहस नहीं की।''

सरबाजीत ने कहा फिर आप लिख दें कि कबीर हार गया है और सरबाजीत जीत गया है। कबीर साहब ने कहा, ''मैं तो लिखना भी नहीं जानता तुम लिख लो मैं हस्ताक्षर कर दूंगा।'' सरबाजीत ने ऐसा ही लिख लिया। जब वह घर जाकर अपनी माता को दिखाने लगा तो उलटा लिखा हुआ था कि सरबाजीत हार गया है कबीर साहब जीत गए हैं।

उसने सोचा शायद मेरे लिखने में गलती हो गई। उसने फिर कबीर साहब के पास जाकर कहा कि अब मैं ठीक तरह से लिखता हूं आप फिर हस्ताक्षर करना। उन्होंने कहा जैसी तेरी मर्जी है तू वैसा ही लिख ले। सरबाजीत ने फिर उसी तरह लिख लिया। जब घर आकर माता को दिखाया तो उसमें फिर उलटा लिखा हुआ था। सरबाजीत ने कहा, ''अब मुझे पता लगा कि कबीर साहब वाक्य में ही जादूगर हैं। वह जादू से मेरा लिखा हुआ उलटा कर देते हैं।'' उसकी माता ने कहा, ''बेटा! यह जादू नहीं सच्चाई है। झूठ का पुलिन्दा ज्यादा दिन तक नहीं चलता। तू कबीर साहब से 'नाम' लेकर अपने जीवन को सुधार।'' माता का कहना मानकर सरबाजीत कबीर साहब का शिष्य बना। आप शब्द में पढ़ते हैंः

छल फरेब के किले एक दिन दुनिया में ढह जाते हैं।
रेतों की दीवार देर तक कभी नहीं टिक पाती है॥

आप कहते हैं, ''मालिक के प्यारे कहीं भी जाएं वहां शान्त ही रहते हैं। जो उनके पास आते-जाते हैं वे उन्हें भी शान्ति का जीवन बिताने के लिए प्रेरित करते हैं।''

रोगी खट दरसन भेखधारी नाना हठी अनेका।
बेद कतेब करेंह् कह बपुरे नहँ बूझेंह् एक एका॥

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''सन्त-महात्माओं ने वेद-शास्त्र लिखने में अपनी जिंदगी लगा दी, आराम की कोई परवाह नहीं की। उन्होंने सोचा! हमारे साथ जैसा भी हुआ हमने भुगत लिया लेकिन कम से कम आने वाले जीव तो इनसे फायदा उठाएंगे।''

हमें मालूम है कि बड़ी-बड़ी चोटी के महात्मा आए। हम गुरु नानकदेव जी की बानी पढ़ते हैं, आपको कुराहिया कहा गया। कसूर के इलाके में एक गांव के लोगों ने तो आपको अपने गांव के अंदर तक आने नहीं दिया कि ये लोगों की बुद्धि खराब करते हैं। आपने एक कोढ़ी की कुटिया में रात गुजारी, उस कोढ़ी का कोढ़ दूर हुआ। दिल्ली में गुरु तेगबहादुर जी का शीश काट दिया गया। गुरु गोविंद सिंह जी ने तीन-चार महीने तक कमरकसा नहीं खोला। मौहम्मद साहब के साथ बहुत बुरा सुलूक किया गया, आपको मक्का से निकाल दिया गया; वह मदीना आ गए। वह जहां से भी गुजरे लोगों ने उनके सिर के ऊपर कूड़ा फैंका। इन मालिक के प्यारों का क्या कसूर था? लेकिन किसी महात्मा ने बद्दुआ नहीं दी।

जब क्राईस्ट को कांटो का ताज पहनाया गया, सूली पर चढ़ाया गया उस समय आकाशवाणी हुई। परमात्मा ने कहा, ''अगर तू कहे तो मैं सबको तबाह कर दूं।'' आपने कहा, ''हे परमात्मा! अगर तू मेरे ऊपर दयाल है तो इन्हें बख्श दे! सद्बुद्धि दे! ये नहीं जानते कि ये

कितना बुरा कर्म कर रहे हैं।'' हम सन्त-महात्माओं को इतने कष्ट देते हैं वे फिर भी हमारे लिए परमात्मा से फरियाद करते हैं कि तू इन्हें बख्श दे। वेद-कतेबों में जो कुछ लिखा है हम उसे सोचते-विचारते नहीं।

मिठ रस खाय सो रोग भरीजै कंद मूल सुख नाहीं॥
नाम विसार चलह् अनमारग अंत काल पछुताहीं॥

आप प्यार से कहते हैं, ''कहीं हमारे दिल में यह ख्याल हो कि हमेशा मीठा खाना और मीठे फल खाने से परमात्मा मिल जाएगा! जिस समय गुरु नानकदेव जी आए उस समय लोग जंगलो में जाकर हठयोग किया करते थे। उन्हें जंगलों में जो कंदमूल फल मिलते थे वे वही खा लेते थे लेकिन इससे भी तन को शान्ति नहीं आती। आप 'शब्द-नाम' के रास्ते को छोड़कर जप, तप, पूजा, पाठ जो भी श्रेष्ठ कर्म कर लें आखिर आपको पछताना ही पड़ेगा।''

कर्म धर्म पाखंड जो दीसे, तिस जम जोगाती लूटे।

अगर हम भूल से किसी गरीब पर रहम करके उसे दस रूपये दान भी कर दें तो अखबारों में छपवाते हैं ताकि लोग हमें दानवीर कहें। हम अपने बच्चों की तरफ नहीं देखते कि उनके पास तो कपड़े भी नहीं हैं। हम दान उस जगह करते हैं जहां पहले ही सोने के कलश चढ़े हुए हैं, माया का कोई हिसाब-किताब नहीं।

सोचकर देखें! जिस परमात्मा ने हमें तन दिया, धन दिया, बाल-बच्चे दिए क्या उसने भी किसी जगह अरदास करवाई? कभी हमारे ऊपर अहसान जताया कि मैंने तुम्हें इतना कुछ दिया है अगर हम उस परमात्मा के दिए हुए में से किसी को कुछ दे देते हैं तो जब तक हम अपनी जपजी सबको न सुनाएं हमें शान्ति नहीं आती। आप कहते हैं:

तीर्थ व्रत और दान कर, मन में धरे गुमान।
नानक नेह फल जात है, ज्यों कुंचर स्नान॥

जैसे हम हाथी को नहलाएं और वह बाहर जाकर अपने ऊपर मिट्टी डाल ले, हमारी भी ऐसी ही हालत है। न तो मीठा खाने से मुक्ति मिलती है और न ही चटपटा खाने से मुक्ति मिलती है। 'नाम' को छोड़कर किसी भी रास्ते पर जाएंगे तो हमें पछताना ही पड़ेगा।

तीरथ भरमै रोग न छूटस पढ़या बाद बिबाद भया।
दुविधा रोग सो अधिक वडेरा माया का मुहताज भया॥

आमतौर पर हमारे पास जब थोड़े से पैसे इकट्ठे हो जाते हैं तो हम मुक्ति प्राप्त करने के लिए तीर्थों को चल पड़ते हैं। सन्त कहते हैं, ''मैली तो हमारी आत्मा है लेकिन हम जिस्म को धोते हैं। पानी हमारी आत्मा की मैल नहीं उतार सकता। हम जिस तालाब में स्नान करते हैं हमें उस पर भी भरोसा नहीं होता अगर इस साल हरिद्वार गए है तो अगले साल कुरुक्षेत्र चले जाते हैं। भरोसा हो तो हम एक स्थान पर ही टिकें।'' आप रोज गुरु नानकदेव जी का जपजी साहब पढ़ते हैं:

भरिए हथ पैर तन देह, पानी धोतयां उतरस खेह।
मूत पलीती कप्पड़ होय, देह सबून लईए ओह धोए।
भरिए मत पापां के संग, ओह धोवे नामे के रंग।
यह शरीर सरवर है है सन्तो, स्नान करे लिव लाए॥

सच्चे से सच्चा सरोवर आपका शरीर है। इसके अंदर जाकर 'शब्द' से लिव लगाएं, नाम से जुड़ें। आप तभी निर्मल और पवित्र हो सकते हैं।

गुरमुख साचा शबद सलाहै मन साचा तिस रोग गया।
नानक हरजन अनदिन निर्मल जिन कौ करम नीसाण पया॥

आप प्यार से कहते हैं, ''जो रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण से पार चले जाते हैं, वे गुरमुख बन जाते हैं; साधना साध लेते हैं; उनके तन-मन का और जन्म-मरण का रोग समाप्त हो जाता है। परमात्मा उन्हें अपने खज़ाने में दाखिल कर लेता है। वे जागते हुए और सोते हुए भी निर्मल हैं क्योंकि उनकी लिव 'नाम' के साथ लग चुकी है।''

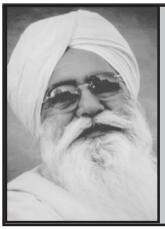

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

ध्यान

16 पी.एस. आश्रम 28 सितम्बर – 1988

एक प्रेमी :- *महाराज जी! मुझे सन्तमत में आए हुए अभी थोड़ा ही समय हुआ है। मैं नया नामलेवा हूँ। मुझे ध्यान के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। मुझे इस बारे में समझाएं?*

बाबा जी :- ध्यान के बारे में बहुत कुछ बताया जा चुका है। आप पुरानी मैगज़ीनें पढ़ें, **ध्यान** के बारे में आपको बहुत जानकारी मिलेगी। यह सच है कि दिल को दिल से राह होती है। आप जिसे याद करते हैं उसका **ध्यान** अपने आप ही आपके अंदर आना शुरू हो जाता है। आप चलते-फिरते प्यार से सिमरन करते हैं, याद बनाते हैं; एकाग्र होते हैं तो **ध्यान** अपने आप ही आने लग जाता है।

सतसंगियों के साथ बहुत सी घटनाएं घटती रहती हैं। गुरु कई बार प्रत्यक्ष रूप में मदद करता है, अभ्यास में दर्शन देता है और सोते हुए भी दर्शन देता है। हमें गुरु के स्वरूप को आँखों से दूर नहीं करना चाहिए। हम कई बार ऐसे स्वरूप से फायदा भी उठा लेते हैं।

गुरु शिष्य का रिश्ता अटूट होता है। सतसंगी कई बार चमत्कार भी देखते हैं। जब रात को सोते हुए हमारा मन शान्त होता है, गुरु अपनी आत्मा को ऊपर के मंडलों में खींच लेता है। ऐसा होने के बाद प्रेमी का मन कई दिन तक खुश रहता है लेकिन हम उस वक्त का फायदा नहीं उठाते, उसे स्वप्न ही समझ लेते हैं।

इस ग्रुप में ऐसे प्रेमी भी बैठे हैं जिन्होंने इंटरव्यू में अपने-अपने अनुभव बताए कि किसी को महाराज सावन के, किसी को महाराज कृपाल के तो किसी को इकट्ठे ही दोनों गुरुओं के दर्शन हुए। यह अपने-अपने बर्तन पर निर्भर करता है जिसका जैसा बर्तन है उसमें

वैसी ही वस्तु ठहर जाती है। प्यारेयो ! जिसकी जैसी भावना होती है वह अपने अंदर उसी तरह की हरि की मूर्त देखता है।

यहां जितने प्रेमी बैठे हैं सबके एक जैसे विचार नहीं, सबका एक जैसा तजुर्बा भी नहीं। गुरु और शिष्य के बीच छोटी-मोटी घटनाएं तो घटती ही रहती हैं अगर घर में कोई घटना घटते समय या किसी ऐक्सीडेंट के समय हमारा ख्याल गुरु की तरफ है तो गुरु दर्शन देता है। कभी घटना घटने से एक-दो दिन पहले भी गुरु चेतावनी देता है।

सन्त हमें कभी भी अपनी कीमती कमाई को बर्बाद करने की सलाह नहीं देते। वे मालिक की मौज में खुश रहते हैं। वे भूत, वर्तमान और भविष्य के बारे में जानते हैं। हमारे प्रालब्ध कर्मों के अनुसार ही घटना घटती है और उसे भोगने में ही हमारा फायदा है। हम सतसंगी लोग भी ऐसी दलीलें देने लगते हैं कि यह घटना क्यों घटी?

आमतौर पर जब डाक्टर को मरीज की मौत का पता नहीं लगता तो वह दलीलबाजी से काम लेता है कि इसे दिल का दौरा पड़ गया! इसका खून रुक गया! यह नहीं कहता कि इसका समय निश्चित था।

हमें लगातार सिमरन करना चाहिए। चलते-फिरते भी अपनी एकाग्रता की तरफ ख्याल रखना चाहिए। मन को फिजूल सोचने नहीं देना चाहिए। जब हम सिमरन करके आँखों के पीछे आते हैं स्थूल, सूक्ष्म, कारण के पर्दे को उतारकर अंदर जाते हैं तब ध्यान अपने-आप ही बन जाता है। आत्मा की दो शक्तियाँ - देखने वाली निरत और सुनने वाली सुरत ये दोनों शक्तियाँ हमारे अंदर हैं। जब हम अपनी आत्मा से तीनों पर्दे उतार लेते हैं तब हमारा ध्यान अपने आप ही दसवें द्वार में लग जाता है। पलटू साहब कहते हैं: ***भजन तेल की धार, साधना अधके साधी।***

जिस तरह तेल की धार नहीं टूटती उसी तरह यहाँ पहुँचे हुए सतसंगी की वृति नहीं फैलती, अटूट **ध्यान** लग जाता है। सतसंगी सिमरन की महानता को नहीं समझते अगर इन्हें सिमरन की महानता का ज्ञान

हो जाए तो **ध्यान** लगने में ज्यादा तकलीफ नहीं होती। आपका मन सारा दिन फिजूल बातें सोचता है अगर आप यही सोच गुरु की तरफ लगा दें, सिमरन की तरफ लगा दें तो आपका सिमरन बन जाएगा।

मैं आपको दुनियावी मिसाल देकर समझाता हूँ, ''जैसे माँ-बेटे का प्यार है, याद करने से ही उसका **ध्यान** आँखों के सामने आ जाता है। पति-पत्नी का प्यार है एक-दूसरे को याद करने से ही ध्यान आँखों के सामने आ जाता है। इसी तरह हम दुनिया के कारोबार को मामूली सा याद करते हैं, उसका नक्शा हमारी आँखों के सामने आ जाता है।''

सन्त कहते हैं कि ये सब चीज़ें हमारे जीवनकाल तक ही हमारे साथ रहती हैं; क्यों न हम सतगुरु की याद को अपने दिल में बिठाएं! सतगुरु ने इस दुनिया के बाद भी हमारे साथ रहना है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''वही सज्जन है जो मुश्किल के समय काम आए।''

तजुर्बा बताता है कि जिन लोगों को दिन में ज्यादा सोचने और ज्यादा बोलने की आदत होती है वे लोग रात को नींद में उन्हीं बातों को बड़बड़ाते हैं। ऐसों के परिवार के लोग सोचते हैं शायद इस पर किसी भूत-प्रेत का साया है। यह भूत-प्रेत का साया नहीं, दिन भर के सोच-विचार होते हैं अगर हम ऐसी ही लगन से गुरु के बारे में सोचें तो हम रात में गुरु का सिमरन कर रहे होंगे! गुरु से बातें कर रहे होंगे! कबीर साहब कहते हैं:

सुपने हू बरड़ायके जे मुख निकसे नाम।
ताके पग की पनही मेरे तन को चाम॥

आप कहते हैं, ''अगर कोई स्वप्न में बड़बड़ाकर भी प्रभु का नाम लेता है मैं उस पर बलिहार जाता हूँ; उसे अपने तन के चमड़े की जूती बनाकर पहनाने के लिए भी तैयार हूँ।''

मेरा समझाने का यही भाव है कि आप जिसे याद करते हैं आपका मन उस तरफ एकाग्र होगा और उसकी शक्ल आपकी आँखों के सामने आएगी। सिमरन करने से एकाग्रता प्राप्त होगी, **ध्यान** बन जाएगा।

❋ ❀ ❋